हाथ-अुद्योग और यंत्र-अुद्योगोंका मेल–४

रजि० नं० बी ४४४८

हरिजनसेवक

पृष्ठ १६

दो आना

(स्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १५ सम्पादक : किशोरलाल मशरूवाला सह-सम्पादक : मगनभाअी देसाअी अंक ६

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद–९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० ७ अप्रैल, १९५१

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

टिप्पणियां

देशके लिअे शराब पिओ !

अभी तक हमारे नेताओंने राष्ट्रीय संकटके समय जनताको अिन्हीं शब्दोंमें अपील की है : 'देशके लिअे करो' या 'देशके लिअे मरो'। गांधीजीका अन्तिम आदेश था 'करो या मरो'। और जब राष्ट्र पर सबसे बड़ा संकट आया, तब अुन्होंने राष्ट्रके लिअे कर या मरकर हमें दिखा दिया।

अिसमें कोअी शक नहीं कि आज हम भयंकर आर्थिक संकटमें फंसे हुअे हैं। लेकिन आय प्राप्त करनेकी पागलपन भरी कोशिशमें नया नारा 'देशके लिअे शराब पिओ' बन गया मालूम होता है! मध्य-प्रदेशके बाद अुत्तरप्रदेशने भी शराबबन्दी-जांच समिति नियुक्त की है। अुड़ीसाके प्रधान मंत्रीने शराबबन्दीकी दिशामें आगे न बढ़नेके लिअे क्षमा मांगी है। बिहार अुसीका अनुकरण कर रहा है। और बिहार प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीने अिस आशयका अेक आदेश निकाल-कर अपने राज्यको आभारी बनाया है कि कोअी भी कांग्रेसी प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीकी अिजाजत लिये बिना शराबबन्दी आन्दोलनमें भाग न ले! कांग्रेस-विधानके अनुसार किसी भी कांग्रेसीको शराब वगैरा नहीं पीना चाहिये, लेकिन अगर अुसने अपने बड़ोंकी अिजाजत लिये बिना दूसरोंको भी नशेबाजीसे बचानेकी कोशिश की, तो अुसके विरुद्ध अनुशासन-भंगकी कार्रवाअी की जायगी! क्या अिससे भी बड़ी कोअी आत्मनिन्दा कांग्रेसकी और कांग्रेस सरकारोंकी हो सकती है? क्या अिससे भी स्पष्ट अिशारा बिहारके शराबबन्दीके समर्थकोंको कांग्रेस छोड़ देनेका किया जा सकता है? अब केवल यही बाकी रह जाता है कि कोअी अुद्योगपति 'अुत्तम शराबकी फेक्टरी' भारतमें कायम करे और किसी मंत्री द्वारा अुसका अुद्घाटन करवाये! यह घटना किसी भी समय घट सकती है।

वर्धा, २८-३-'५१
(अंग्रेजीसे)

पुलिस द्वारा गोलीबार

दो नजरबन्द कैदियों (डिटेन्यू)की तरफसे हैद्रराबाद हाअीकोर्टमें हेबियस कार्पस (कैदीको न्यायाधीशके सामने पेश करनेकी) अरजी की गअी थी। अुस पर से ये बातें प्रकाशमें आअीं कि श्री पी० रंगाचारी तथा वडेरा राजरेड्डी नामके दो कम्युनिस्ट कहे जानेवाले व्यक्ति पुलिसके गोलीबारसे मारे गये थे। श्री पी० रंगाचारी पर १९४९ के अक्तूबरमें गोलीबार हुआ था। श्री राजरेड्डीके बारेमें पूरी खबरें अब तक मालूम नहीं हुअीं। अुनकी मृत्युका समाचार अुनके सम्बन्धियोंको भी नहीं दिया गया था। और अगर हेबियस कार्पस अरजी न की होती, तो वे जीवित हैं या मर गये हैं और कैसे मर गये हैं, अुसका कुछ भी पता नहीं लगता। अभी भी पूरी तफसील नहीं मिली है। फिलहाल हैदराबाद हाअीकोर्टने सिर्फ दूसरेके सम्बन्धमें तफसीलकी मांग की है।

मैं फिरसे कहता हूं कि चूंकि सरकारोंको नजरबन्द रखनेके लिअे विशाल सत्ता दी गअी है और वे कानून तथा व्यवस्था वगैराके लिअे ताकतका अुपयोग करनेमें मानती हैं, अिसलिअे अूपरके मामलोंमें जो अमलदार यह हकीकतें दबानेके लिअे जिम्मेदार हों, अुनको भी जब तक वे अपनी निर्दोषता साबित न कर दें तब तक नजरबन्द रखना चाहिये। और अगर अैसा करनेमें वे निष्फल रहें, तो अुन्हें अुचित दण्ड दिया जाय। अगर गृहमंत्री अैसा न करे, या अिसके लिअे वे खुद जिम्मेदार हों, तो हाअीकोर्टको अैसा करनेकी सत्ता होनी चाहिये, क्योंकि अुसके पास यह मामला पेश हुआ है, और अुसे अिसकी जान-कारी प्राप्त हुअी है। अिसमें अपनी निर्दोषता सिद्ध करनेका भार आरोपी पर होना चाहिये, और अुसके लिअे गवाहोंके कानूनमें कुछ तबदीली करनी जरूरी हो तो वह भी करनी चाहिये।

वर्धा, २७-३-'५१
(अंग्रजीसे)

मुफ्त 'हरिजन'

पात्र वाचकोंको मुफ्त 'हरिजन' भेजनेके लिअे दो-तीन दाताओंने मुझे छोटी-छोटी रकम भेजी है। अुनकी अिच्छानुसार अुसका अमल किया जावेगा। अेक दूसरे भाअीने सुझाव रखा है कि अैसे दानोंका प्रथम अुपयोग अमेरिका और युरोपकी चुनी हुअी संस्थाओंको मुफ्त 'हरिजन' भेजनेमें किया जाय। जो दाता स्पष्ट अिच्छाके साथ अिस हेतुके लिअे अपना दान भेजेंगे, अुनके अुस द्दानका अुपयोग अवश्य अुसी तरह किया जावेगा। लेकिन मुझे कह देना चाहिये कि अिस तरह विदेशमें प्रचार कार्य करनेमें मुझे बहुत श्रद्धा नहीं है। 'हरिजन'का प्रचार करनेका अेक ही सही मार्ग अुसमें बताये हुअे सिद्धान्तों और कार्यक्रमों पर अमल करनेका है। 'हरिजन' यदि सिर्फ सयानेपनकी या खरी खरी बातें करनेवाला पत्र बननेके बजाय किये जानेवाले कार्योंका मुखपत्र बने तो लोग खुद होकर अुसे खरीदेंगे। जब गांधीजी अेक जोरदार प्रवृत्ति चलाते, तब 'हरिजन'की बिक्री हजारों तक पहुंच जाती और प्रवृत्ति जब मंद हो जाती, तब बिक्री बहुत गिर जाती। अिस तरह 'हरिजन'की अधिक मांग न होनेमें मेरी खुदकी ही मर्यादाअें कारणभूत हैं।

तब भी अैसे दान सदा अुचित ही हैं। लेकिन अैसे दानोंका लाभ अुन्हींको प्रथम मिलना चाहिये, जो 'हरिजन' पढ़नेके लिअे अुत्सुक हैं, लेकिन जिनकी अुसे खरीदनेकी शक्ति नहीं है। अैसे वाचक देशके हों या विदेशके, अिसका अधिक महत्त्व नहीं है। लेकिन विदेशके कार्यकर्त्ताओंकी अपेक्षा अपने देशमें ही काम करनेवाले कार्य-कर्त्ताओंकी स्थिति और आवश्यकताकी हमें ज्यादा जानकारी हो सकती है। अिसलिअे अुन्हें प्रथम पसंदगी मिलनी चाहिये। दाताको जब किसी विदेशी वाचकके बारेमें निश्चित रूपसे जानकारी हो कि

www.vinoba.in

वे सर्वोदयमें बहुत दिलचस्पी रखते हैं, लेकिन 'हरिजन' खरीदनेकी अनकी शक्ति नहीं हैं, तब वे अवश्य अुनकी सिफारिश करें।

यह याद रखना चाहिये कि विदेशके लिअे वार्षिक चंदा रु ८; शि० १४; या डॉ० २ है।

वर्धा, २८-३-'५१ कि० घ० म०

(अंग्रेजीसे)

अहिंसा सप्ताह [२७ वां वर्ष]

अहिंसाकी जो प्रवृत्ति मैंने छोटे रूपमें सन् १९२५ में शुरू की थी, वह पिछले २६ वर्षोंमें धीरे-धीरे बढ़ती गअी है।

अिस जीवदयाकी प्रवृत्तिका अुद्देश्य सिर्फ मनुष्योंका नहीं, बल्कि छोटे-बड़े प्राणियोंका भी दुःख दूर करनेका और सब जीवोंको अधिकसे अधिक सुख पहुंचानेका है। हम विश्वशांति चाहते हैं। तो हमें अहिंसा सप्ताह मनानेमें सहयोग देना चाहिये। अिससे हम सभी आपसमें भाअीपनका अनुभव कर सकेंगे, चाहे हम अलग-अलग देशके क्यों न हों।

लंदनकी अखिल जगत् जीव-वध-विरोधी सभाकी अवैतनिक मंत्री मिस मार्गरेट अी० फोर्डकी बिनती पर हमने गत तीन वर्षोंमें अखिल जगत पशु-दिन मनाया था। हमारी बिनतीको मानकर लंकामें अिन तीन वर्षोंमें अुस दिन क्रमशः ८, १५ और २३ स्थानों पर मांसकी दुकानें बंद रही थीं।

यह प्रवृत्ति सार्वजनिक है, अुसके पीछे कोअी राजनैतिक या साम्प्रदायिक हेतु नहीं। अिसलिअे हम सबसे प्रार्थना करते हैं कि मअी महीनेके पहले सप्ताहमें हर वर्ष मनाये जानेवाले अहिंसा सप्ताहको मनानेमें वे सहयोग दें। अिस सप्ताहके दरमियान अिन तीन नियमोंका पालन किया जाना चाहिये:

१. जीवहत्या नहीं करना,

२. शाकाहार ही करना,

३. दोपहरमें ११-३०से १ बजे तक पशुओंको आराम देना और अिस बीच पशुवाहनोंका अुपयोग नहीं करना

पानाडूर (सिलोन) डब्ल्यु० अेस० फरनान्डो

प्रिन्सिपल, युनिवर्सल कॉलेज

(अंग्रेजीसे)

गूजरात विद्यापीठके प्रकाशन

चुपकी दाद

मौलाना अल्ताफ़हुसेन 'हाली'

अुर्दूके प्रगतिशील कवि हालीका प्रसिद्ध काव्य (नागरी लिपिमें)

कीमत ०-३-०

आधुनिक हिन्दी कविता

संपादक: नानुभाअी का० बारोट

गिरिराज किशोर

आधुनिक युगकी हिन्दी कविताओंका यह सुन्दर संग्रह ता० ११-४-'५१ को प्रकाशित हो रहा है। अिसमें कवियोंका संक्षिप्त परिचय और कठिन शब्दार्थ भी दिये गये हैं।

कीमत १-०-०

प्राप्तिस्थान:— नवजीवन कार्यालय

अहमदाबाद-९

स्वर्गके बीच नरक

अिस वसन्तके आरंभका अेक शान्त और मेघरहित प्रभात था। मेरे थके हुअे शरीर और स्नायुओंको आराम देने और ताजा बनानेके लिअे अपना नित्यका नियमित काम न करते हुअे मैं अुस अेकांत स्थानमें निकल गअी, जहां छोटीसी रंभा नदी गंगाजीके पवित्र जलमें मिल जाती है। मैं अेक बड़े पत्थर पर बैठकर चारों ओर देखती और सुनती रही। आकाश नीला और स्फटिक-सा स्वच्छ था। गंगा मेरी बाअीं ओर बह रही थी और मेरी दाहिनी ओर छोटी रंभा मीठा और मधुर गीत गाती हुअी पत्थरों पर नाच रही थी। चारों तरफ विभिन्न प्रकारके पक्षी कलरव कर रहे थे और बीच-बीचमें चांदीसी चमकती मछली सूर्यप्रकाशमें अुछल पड़ती और फिर पानीमें आनन्दसे डुबकी लगाकर गायब हो जाती। पवित्र गंगाके अुस पार और अूपरकी ओर देखने पर जंगलोंसे भरे हुअे हरेभरे पहाड़ोंकी सुन्दर कतारें दिखाअी दीं; मेरे सिर पर प्रातःकालीन सूर्यके प्रकाशसे चमकता हुआ आकाशका विशाल मेघ-रहित वितान तना हुआ था।

यह प्रकृतिका दिव्य सत्संग है, जो कभी हमें निराश नहीं करता।

* * *

अीश्वरने संसारको कितना सुन्दर बनाया है, लेकिन मनुष्यने अुसको कैसा बिगाड़ दिया है? और यहांसे केवल तीन मिल पर पवित्र गंगाके अगले मोड़ पर बसे हुअे हृषीकेषकी याद आते ही मैं कांप अुठी।

जो हृषीकेश अेक समय ऋषियों और अुनके शिष्योंका निवास-स्थान था — अुन बुद्धिमान और साधु पुरुषोंका जो अीश्वरके साथ समन्वय साधकर रहते थे और आसपासकी प्रकृतिकी दिव्य शोभासे शक्ति और पवित्रता ग्रहण करते थे — अुस पवित्र स्थानकी आज क्या दुर्दशा हो गअी है! आह, आज वह अवर्णनीय अपवित्रताका अड्डा बन गया है। आज भारत देशके अिस सबसे बड़े साधुओं (तथाकथित)के केन्द्रमें षड्यंत्र, लोभ, वासना, पाप और अपराधोंका बोलबाला है। पशुलोकके अेक कार्यकर्त्ताकी पत्नीने हृषीकेशके अपने अेक वर्षके निवासकालमें वहां जो देखा, अुसीका यहां मैं अुल्लेख करूंगी। वह शान्त प्रकृतिकी बुद्धिमान स्त्री है। मेरे साथ बातचीत करते हुअे अुसने प्रसंगवश मुझे ये बातें बताअी थीं। हृषीकेशके लिअे वे बातें अितनी आम बन गअी हैं कि लोग अुनके बारमें ज्यादा विचार ही नहीं करते। वे केवल अितना ही अपने मनमें कह लेते हैं: "अरे, यह हृषीकेश है।"

अुसने हृषीकेशमें यह देखा:

१. अेक घने जंगलमें पेड़से लटकता हुआ मनुष्यका शरीर।

२. अेक मृत स्त्रीका कड़ा पड़ चुका बिलकुल नंगा शरीर जिसके पांव हवामें झूल रहे थे और सिर व कंधे पानी और रेतमें गड़े हुअे थे।

३. दो बार, छोटे शिशुओं (जो ताजे ही पैदा हुअे थे) के रेतमें दबे हुअे मृत शरीर, जिनको कुत्तों और कौओंने फिरसे आधा रेतके बाहर निकाल लिया था।

अगर अितना अुसने प्रत्यक्ष देखा, तो अुन दूसरी बहुतसी बातोंकी कल्पना की जा सकती है, जो अुसने दूसरेसे सुनी थी। अिस दिव्य शोभावाले सुन्दर वातावरणमें मनुष्यने अैसा भयंकर नरक पैदा कर दिया है। अैसे दृष्य जिन कामोंकी ओर अिशारा करते हैं, वे साधारण समाजमें भी काफी बुरे माने जाते हैं। लेकिन जब वे साधु-संसारके केन्द्रमें दिखाअी देते हैं, तो वे अूंचे स्वर्गको भी मलिन और दुर्गंधपूर्ण बना देते हैं।

पशुलोक, २८-१-'५१ मीरा

(अंग्रेजीसे)

www.vinoba.in

हिन्दुस्तानी तालीमी संघ

हिन्दुस्तानी तालीमी संघकी अेक बैठक सेवाग्राममें २ मार्च, १९५१को हुअी। नीचे लिखी मुख्य बातें बैठकके सामने आअीं:—

१. महर्षि रमण, योगी अरविन्द, सरदार वल्लभभाअी पटेल और ठक्कर बापाके देहान्त पर नीचे लिखा शोक प्रस्ताव अखिल भारत नयी तालीम सम्मेलनमें पेश करनेके लिअे पास किया गया:

> यह सम्मेलन साधक-श्रेष्ठ महर्षि रमण, योगिराज अरविन्द, राष्ट्रनिर्माता सरदार पटेल और आदर्श समाज-सेवक ठक्कर बापाके महान व्यक्तित्व, अनुपम चरित्र तथा अलौकिक कार्य और व्रतनिष्ठाका आदर और गौरवके साथ स्मरण करता है और अुनके निधनसे संसार और देशकी जो क्षति हुअी है तथा आध्यात्म, राष्ट्रनिर्माण और समाज-अुत्थानके क्षेत्रमें जो अपूरणीय शून्यता आ गअी है, अुसका अनुभव कर हार्दिक शोक प्रगट करता है। यह सम्मेलन अिनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पण करता है और अीश्वरसे प्रार्थना करता है कि अुनके आदर्श चरित्र हमारा सतत पथ-प्रदर्शन करें तथा अिनकी बन्धनमुक्त पुनीत आत्माअें सदा हमारे हृदयोंमें अुच्च भावनायें भरती रहें और हमें सदुद्योगोंकी ओर प्रेरित करती रहें।

२. ता० १ मअी १९५१ से तीन सालके लिअे नीचे लिखे सज्जन संघके पदाधिकारी चुने गये:

१. श्री काका कालेलकर	अध्यक्ष
२. श्री आर्यनायकम्	मंत्री
३. श्री श्रीमन्नारायण अग्रवाल	कोषाध्यक्ष

३. नीचे लिखे सदस्योंको लेकर कार्यकारिणी समितिका चुनाव किया गया:

१. श्री काकासाहब कालेलकर	अध्यक्ष
२. श्री० आर्यनायकम्	मंत्री
३. श्री श्रीमन्नारायण अग्रवाल	कोषाध्यक्ष
४. प्रो० मुजीब	
५. श्रीमती शान्ता नारूलकर	
६. श्री धीरेन्द्र मजूमदार	
७. श्री गोपबन्धु चौधरी	

४. नीचे लिखे संघके नये सदस्य चुने गये:

१. श्री राधाकृष्ण, नअी तालीम केन्द्र, राजपुरा
२. श्री के० अरुणाचलम्, रामकृष्ण विद्यालय, कोयम्बतूर
३. श्री क्षितीशराय चौधरी, नअी तालीम संघ, बलरामपुर

५. ग्रामीण विश्वविद्यालय बनानेके लिअे नीचे लिखे सदस्योंकी अेक समिति नियुक्त की गअी:

१. काका कालेलकर	अध्यक्ष
२. श्री श्रीमन्नारायण अग्रवाल	
३. श्रीमती मारजरी साअिक्स	
४. श्री जी० रामचन्द्रन्	
६. श्री नारायण देसाअी	
६. आचार्य बद्रीनाथ वर्मा	
७. श्री आर्यनायकम्	संयोजक

अिस समितिके कामके बारेमें नीचे लिखे निर्देश किये गये:

१. अुत्तर बुनियादी विभागके जिन विद्यार्थियोंने चार सालका शिक्षाक्रम पूरा किया है अुनके कामकी जांच करना।

२. बिहार और सेवाग्राममें जिन विद्यार्थियोंने अुत्तर बुनियादी शिक्षाक्रम पूरा किया है, अुनके लिअे अुच्च शिक्षाका अभ्यासक्रम तैयार करना।

३. नअी तालीमकी विभिन्न अवस्थाओंकी और आजकी मौजूदा शिक्षा-पद्धतिके विभिन्न विभागोंकी आखिरी योग्यताओंका तुलनात्मक अध्ययन करना।

अी० व० आर्यनायकम्
मंत्री, हिन्दुस्तानी तालीमी संघ

शराबबन्दी और शराबकी चोरबाजारी

सोलापुरसे श्री रामकृष्ण जाजू लिखते हैं:—

> "'शराबबन्दी सदा सफल है' यह आपका लेख ध्यानपूर्वक पढ़ा। मैं गुजरात, सौराष्ट्रमें अभी ही घूमकर आया हूं। मद्रास प्रान्तमें भी घूमकर आया हूं। दारूबन्दीसे तो आर्थिक व नैतिक लाभ हुआ ही है। सिनेमा, चाय, तम्बाकू, बीड़ी, सिगारेट, सरकार बन्द करेगी तो, अब्जों रुपयेका गरीबोंका भला होगा, अैसा भी जगह-जगह लोग बोलने लगे हैं।"

भाअी जाजूजीका कहना ठीक है कि सिनेमा, चाय, तम्बाकू वगैरा बन्द हो, तो अुनका अिस्तेमाल करनेवालोंको फायदा होगा। लेकिन अिन चीजोंको शराबके साथ रखना सही नहीं होगा, और न अुनको शराबके माफिक सरकार बन्द करवा सकती है। लोगोंको समझकर खुद अुन्हें छोड़ना चाहिये।

अुसी लेखको पढ़कर गुजरातके अेक भाअीने लिखा:

> "आपकी बात बिलकुल ठीक है। लेकिन खेदके साथ मुझे कहना चाहिये कि शहरमें तो चोरी-छुपीसे काफी शराब मिल सकती है। अैसी हालतमें हम कैसे मानकर बैठ जायं कि 'शराबबन्दी सफल ही है'? समाजसेवकोंको जाग्रत बनकर भगीरथ पुरुषार्थ करना चाहिये, और अुस पर वजन देना जरूरी है।"

यह अुनका कहना ठीक है। मैंने अुसी लेखमें कहा ही है कि शहरोंमें शराबकी चोरबाजारी है ही और अुसको ठीक करना जरूरी है। परन्तु, जैसा कि कअी लोग अुस परसे कहते हैं, अुस कारणसे शराबबन्दी रद्द कर देना चाहिये, यह सही नहीं है। यही बतानेकी मेरी अुस लेखमें चेष्टा रही है। और अैसी चोरबाजारी वगैरा देखकर कअी लोग कहते हैं कि शराबबन्दी विफल गअी, वह भी गलत बात है। यह बतानेके लिअे मैंने चोरी, डकैती वगैराका अुदाहरण देकर कहा कि शराबबन्दी तो सदा सफल है। सरकारने अुसके लिअे कायदा बनाया, यही बड़ी बात है; सिर्फ अुससे भी तो कितनी ही शराबखोरी अपने आप रुक जायेगी; और अुसकी जमात बढ़ने न पायेगी; और नअी पीढ़ी अुस व्यसनसे निर्दोष तैयार होगी। अिस नतीजे पर पहुंचनेके लिअे केवल समाजसेवकका ही नहीं, सभी नागरिकोंका धर्म है कि वे सरकारको मदद दें। जैसे चोरी, डकैती वगैरामें गुनहगारको पकड़नेमें हम मदद देते हैं, वैसे ही शराबकी चोरबाजारीको भी काबूमें लेनेके लिअे हम सब सरकारको मदद दें। परन्तु गौर करनेकी बात तो यह है कि शराबकी चोरबाजारीको देखकर हम यह न कहें कि शराबबन्दी निकाल दो। यह तो डकैती, चोरी, बहुत होने लगे तो चोरोंको पकड़ना छोड़ दो, अैसा कहनेके बराबर होगा। शराबबन्दी सारे जगतमें अेक हमारा बुलन्द प्रयोग है। अुसके अूपर दुनियाके लोगोंकी निगाह है। वह दुनियाको हमारी अेक बड़ी देन होगी।

अहमदाबाद, २३-३-'५१ **मगनभाअी देसाअी**

महादेवभाअीका पूर्वचरित

ले० — नरहरि परीख

अनु० — रामनारायण चौधरी

कीमत ०—१४—० डाकखर्च ०—३—०

नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद-९

www.vinoba.in

हरिजनसेवक
७ अप्रैल १९५१

हाथ-अुद्योग और यंत्र-अुद्योगोंका मेल—४

परिणाम और गर्भित अर्थ

अिस नीतिके परिणाम संक्षेपमें अिस प्रकार बताये जा सकते हैं:

१. खादीकी अुत्पत्ति और बुनियादी तालीमके प्रचारको अुससे अपूर्व प्रेरणा मिलेगी।

२. खादी अिस्तेमालकी मुख्य अड़चन (मूल्यकी महंगाअी) और आदतन खादी पहननेके नियमका पालन टालनेका लालच दूर हो जायगा।

३. हरअेक जरूरत-मन्द आदमीको काम मिल जायगा, और चूंकि मेरा अनुमान है कि कताअीकी दरें आसपासके दूसरे अुद्योगोंकी मजदूरीसे कुछ कम होंगी, अिसलिअे अैसा भी नहीं होगा कि अुसके कारण दूसरे कामोंमें मजदूरोंकी कमी हो जाय। वह सही मानेमें फुरसतका और दुय्यम दरजेका अुद्योग होगा।

४. अुससे देशमें कपड़ेकी कमी पैदा किये बिना मिल-कपड़ेका निर्यात व्यापार चल सकेगा।

५. देर-अबेर, जैसे-जैसे हमारे ग्राहक देश अपना अुद्योगीकरण करना शुरू करेंगे, या ज्यादा साधन-सम्पन्न देश हमारी होड़ करने लगेंगे, वैसे-वैसे मुमकिन है कि हमारा कपड़ेका निर्यात व्यापार गिरेगा। लेकिन, तब तक हमारे बड़े-बड़े और केन्द्रित कारखाने खुद ही विकेन्द्रीकरण और छोटे-छोटे अुद्योगोंमें बंट जानेके रास्ते पर पहुंच चुके होंगे। चरखेने भी तब तक देहातमें अेक नया रूप ले लिया होगा। अिस तरह, अल्पकालिक या दीर्घकालिक किसी भी दृष्टिसे देखिये, यह नीति राष्ट्रके लिअे लाभप्रद सिद्ध होगी।

अैसे कअी ग्रामोद्योग हमारे यहां हैं, जिन्हें यांत्रिक अुद्योगोंसे होड़ करनी पड़ती है — मसलन्, घानीको तेल-मिलसे, तेल और घीको जमाये तेलोंसे, हाथ-कागजको मिल-कागजसे, गुड़को शक्करसे, अित्यादि। अिन सब अुद्योगोंमें होड़का वही अेक प्रकार है: यांत्रिक अुद्योगोंमें जहां अुत्पादन बड़े पैमाने पर होता है और मजदूरोंकी संख्या कम होती है, वहां हाथ-कामोंमें अुत्पादन कम प्रमाणमें होता है और मजदूर ज्यादा लगते हैं। यहां खादीके अुदाहरणमें जिस सिद्धान्तका प्रतिपादन हुआ है, अुसका अुपयोग अिन सब ग्रामोद्योगोंके लिअे किया जा सकता है। यातायातके लिअे बैलगाड़ी जैसे प्राणि-वाहनोंके अुपयोगका सवाल भी अिसी सिद्धान्तके अनुसार हल करना होगा, अगरचे अुसके अमलका ढंग कुछ दूसरा हो सकता है। ज्यादातर अुदाहरणोंमें कारखानोंके मालमें थोड़ीसी महंगाअी कर देनेसे, हाथका तैयार माल सस्ते भावों पर बेचा जा सकेगा; और अुन लाखों मजदूरोंको, जो बेकार हो जाते हैं, पेट भरनेका साधन जुट जायगा। अिसके सिवा, कारखानोंके किसी न किसी वजहसे अचानक बन्द पड़ जानेकी हालतमें जीवन और देश रक्षाका अेक प्रबल साधन तैयार रहेगा। और यदि किसी क्षेत्रमें हमारे तैयार मालके निर्यात-व्यापारकी गुंजाअिश हो, जैसे कि आज मिलके कपड़ेमें तो अुसे देशमें कमी पैदा किये बिना चलाया जा सकेगा।

अलबत्ता, यह आवश्यक है कि अिस नीति पर चलनेके पहले राज्यको नीचे लिखे बुनियादी सिद्धान्तोंको समझना, स्वीकार करना और घोषित करना चाहिये:

१. गांवोंको भी अुद्योगोंके केन्द्र होना चाहिये। वे सिर्फ किसानों, खेतिहर मजदूरों, या जंगली अुपज बीननेवालोंकी बस्तियां बनकर रह जायं अैसा नहीं होना चाहिये।

२. अिसलिअे बुनियादी तालीम, यानी दस्तकारियोंके जरिये तालीमकी योजना ही भारतकी राष्ट्रीय शिक्षा-योजना है।

३. गांवोंकी अुन्नति और समृद्धिके लिअे खादी तथा ग्रामोद्योगोंको राज्य महत्त्वका साधन मानता है।

४. राज्य अिन अुद्योगोंको राष्ट्रीय सुरक्षाकी दुय्यम कतारकी तरह कायम रखना जरूरी समझता है।

५. अिसलिअे यह अभिष्ट है कि गांव, बन सके अुतना, खादी और गांवमें ही तैयार किये गये मालका अुपयोग करें। अपने कपड़े या तेल, चावल वगैरा जैसी जीवनकी बुनियादी चीजें कारखानोंमें बनी हुअी अिस्तेमाल करनेकी प्रवृत्ति गांवोंके हितमें नहीं है।

६. अिसलिअे राज्यका फर्ज है कि वह गांवोंमें कातने-बुनने तथा खादी-कामकी दूसरी सहायक क्रियाओंका ज्ञान जितनी जल्दी और जितना ज्यादा हो सके दे। अिसी तरह, दूसरे जरूरी ग्रामोद्योगोंकी नयी प्रक्रियाओंका ज्ञान भी फैलावे। और अन्तमें अिस अुद्देश्यकी पूर्तिके लिअे

७. राज्यको चाहिये कि वह हाथ-अुद्योगोंकी मदद करे जिससे कि हाथके माल और कारखानोंके मालके बीच आजकी विषम होड़ दूर हो जाय, और हाथका माल कारखानोंके मालकी बनिस्बत सस्ते या अुतने ही भावों पर बेचा जा सके।

मैं आशा करता हूं कि हमारे अर्थशास्त्री अिन प्रस्तावों पर विचार करेंगे। दूसरे देशोंमें, अमेरिका और युरोप जैसे यंत्र-प्रधान देशोंमें भी, ये सिद्धान्त कुछ फेरफारके साथ काममें लाये जा सकते हैं।

वर्धा, १-३-'५१ कि० घ० मशरूवाला

(अंग्रेजीसे)

आसाम भूकंप राहत कोष

[ता० ११-३-'५१ से ३१-३-'५१ तक]

नाम	स्थान	रु० आ० पा०
श्री बलुभाअी अेम० महेता	खंडाबरा	४-०-०
नाअीट स्कूल	लीलापुर	१-४-०
श्री रावसाटे पंडित	धुलिया	१-०-०
" अेन० अेम० भागवागर	भागवा	१०-०-०
" अे० बी० शाह	अंगास	२-०-०
पहुंच दी जा चुकी रकम		२९,१८१-१०-३
कुल रु०		२९,१९९-१४-३

नोट: ता० ३१-३-'५१ तक अूपरकी जो रकम प्राप्त हुअी है, अुसमें से रू० २४,१६३-३-० स्व० सरदार वल्लभभाअी पटेलके जरिये चेकसे आसामके गवर्नरके पास ता० २८-११-'५०को भेज दिये गये थे। बाकी बची हुअी रकम रु० ५,०३६-११-३ (जो अुसके बादसे अभी तक मिली है) अब आसामके गवर्नरको भेज दी गअी है। अिस अंकसे हम आसाम भूकंप राहत कोष सम्बन्धी सूचना 'हरिजन' पत्रोंमें नहीं देंगे। अलबत्ता, अिस कोषके लिअे आगेसे मिलनेवाला पैसा आसामके गवर्नरके पास भेज दिया जायगा, लेकिन अुसकी पहुंच 'हरिजन' पत्रोंमें नहीं दी जायगी।

जीवणजी देसाअी

हमारा नया प्रकाशन
सर्वोदयका सिद्धान्त
कीमत ०-१२-० डाकखर्च ०-२-०
नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद-९

www.vinoba.in

विनोबाकी पैदल यात्रा

३

[शिवरामपल्लीकी यात्रामें श्री विनोबाके जगह-जगह दिये हुअे प्रवचनोंका वृत्तान्त पिछले अंकमें दो भागोंमें आ चुका है। अब अुसके लेखक बदल गये हैं, जिन्होंने अिस वृत्तान्तको नये सिरेसे लिखा है। पुनरुक्तिसे बचनेके लिअे जो अंश पिछले अंकमें आ चुका है अुसे छोड़कर शुरूका सामान्य चित्र ही अिसमें लिया गया है। और जहां पर पहले दो भाग पूरे होते हैं, अुसके बादका पूरा वत्तान्त दिया गया है। —सं०]

प्रेमका दबाव

अुन दिनों विनोबाजी अेक हफ्तेके लिअे सेवाग्राम गये हुअे थे। बरसमें अेक बार अक्सर वे आश्रममें रह आते हैं। अिस बार तालीमी संघका सातवां अधिवेशन भी था। दूर-दूरसे लोग आये थे, जिनमें सर्वोदय समाजके सेवक भी थे। अनुगुल अधिवेशनमें विनोबाजी अुपस्थित नहीं थे। लोग सहसा पूछ लेते कि "आप हैदराबाद तो आ रहे हैं न?" तो विनोबाजी 'ना' कह देते। परन्तु अुससे श्री रामकृष्ण धूत आदि सब कार्यकर्त्ताओंको निराशा मालूम होती थी। सम्मेलनको निमंत्रण देनमें कुछ हद तक मेरी भी जिम्मेवारी थी, अिसलिअे चाहता तो मैं भी था कि विनोबाजी हैदराबाद जरूर आयें। लेकिन मेरे पास सिवाय मूक-प्रार्थनाके और कौनसा बल था?

अिसलिअे जब ता० ६ को सर्व-सेवा-संघकी सभामें सब लोग अिकट्ठे हुअे, तो करीब-करीब सबने ही अुनके न जानेके विचारका अेक मतसे विरोध प्रकट किया। परिणामतः प्रेमके सामने अुन्हें हार माननी पड़ी।

सबकी खुशीका पार नहीं था। अुसी रोज सेवाग्रामकी शामकी प्रार्थनामें जब विनोबाने यह यात्रा पैदल करनेका अपना निर्णय जाहिर किया, तब कुछ मित्रोंने कहा: "आप पैदल यात्राका निर्णय करेंगे अैसा मालूम होता, तो हम अितना आग्रह करते ही नहीं।" विनोबाने सबको निर्भय करते हुअे कहा: "आप लोग संकल्प तोड़ने-तुड़वानेकी बात न सोचें, प्रवासकी योजना बनानेमें मदद दें। पूरा होनेके पहले कोअी शुभ संकल्प तोड़ना हीं नहीं चाहिये। शुरूमें ही अपवादकी बात सोचनी नहीं चाहिये। अुससे न संकल्प-शक्ति बढ़ती है, न प्रतिभा ही।"

"देखे री मैंने"

सवेरे सेवाग्रामसे पवनारके लिअे चलना था। बापूके "आखिरी निवास" वाली कुटियाके पास तालीमी संघके छात्र और कार्यकर्त्ता जमा हो गये। विनोबाजी बापूवाली अुस कुटियामें ठहरे हुअे थे। छात्राओंने भजन गाया: "सुनेरी मैंने निर्बलके बल राम।" बिदा होते समय विनोबाजीने कहा: "मेरे अिस नये कार्यको आशीर्वाद देनेके लिअे आप सब लोग अितने सवेरे यहां आये हैं। आपने जो भजन सुनाया, अुसने मुझे बहुत बल पहुंचाया है। "सुनेरी मैंने निर्बलके बल राम!" सूरदासने तो अिस बलके बारेमें सुन ही रखा था, लेकिन मैंने अुसे देखा है। अिसलिअे अपने अनुभवके निचोड़को मैं तो अिन शब्दोंमें गाअूंगा — "देखरी मन निर्बलके बल राम"। अैसे भी मैं निर्बल तो पहलेसे ही हूं, लेकिन सब लोगोंने सब तरहसे प्रेम करके मुझे सबल बनाया है। और आज भी आपने वैसा ही किया है, जिसके लिअे मैं आपको धन्यवाद देता हूं। और प्रार्थना करता हूं कि परमेश्वर आपके काममें जस दे।"

भक्तिका नमूना

अुनका काम यानी नअी तालीमका काम, यानी आशादीदी और आर्यनायकमजीका काम। अुनका जिक्र करके विनोबाजीने आगे कहा: "दोनोंके लिअे मेरे हृदयमें शुरूसे प्रेम रहा है, जिसे मैं आज कृतज्ञतापूर्वक प्रगट करना चाहता हूं। नअी तालीमके काममें अुन्होंने अपनेको जिस कदर पूरी तरह लगा दिया है, वह परमेश्वरकी भक्तिका अेक नमना है। मैं अुस काममें अुनका यश चाहता हूं। अुनका काम मेरा ही काम है। मेरा हार्दिक सहयोग अुन्हें अब तक मिलता रहा है। आगे भी हर तरहका सहयोग जितना वे लेना चाहेंगे अुनको मिलता रहेगा। हम लोग परस्पर हृदयके सम्बन्धोंसे बंधे हुअे हैं और हृदयके सम्बन्धसे बढ़कर और कोअी सम्बन्ध नहीं है।

भीगी आंखों और भावभरे हृदयोंसे मित्रोंने विनोबाजीको बिदा किया। सेवाग्रामसे परंधाम सीधे रास्ते चार ही मील है, लेकिन विनोबाजीने वर्धा होकर जाना पसंद किया। वे श्री किशोरलालजी मशरूवालासे मिले। जाजूजीसे भेंट की। वर्धाके अन्य मित्र भी मिले। महिलाश्रम, गोपुरी आदि संस्थावालोंसे भी बातचीत हुअी। हर जगह कुछ अैसा भाव प्रकट हो रहा था, मानो बड़ी लम्बी सफर पर निकल रहे हों।

(अुसी शामका परंधामकी प्रार्थनामें दिया हुआ प्रवचन पिछले अंकमें छप चुक है।)

पहला मुकाम

[ता. ८-३-'५१: परंधामसे वायगांव: तेरह मील]

दूसरे दिन सवेरे पांच बजे परंधामसे कूच हुआ। पहला मुकाम १३ मील पर वायगांव पर करना था। वायगांवको वर्धा होकर ही जाना पड़ता है। साथियोंको पता था कि लक्ष्मीनारायण मंदिर होकर विनोबाजी आगे जायेंगे। मित्र लोग बड़े सवेरेसे वहां जमा हो गये थे। विनोबाजी आये। 'वैष्णव जन" और राम-धुन गायी गयी। कुछ क्षण वातावरण निस्तब्ध रहा। सहसा जानकीदेवीजी खड़ी हो गअीं। कंठ कुछ रूंधा हुआ मालूम हुआ। साहस पूर्वक बोलीं: "बापूजी और जमनालालजीके बाद अब हम लोग विनोबाजीसे कुछ सांत्वना पाने लगे थे; बल भी मिलने लगा था। पर सर्वोदय सम्मेलनकी बारात बिना वरके कैसे चढ़े? विनोबाजी बालहठी हैं। समझानेसे माननेवाले भी नहीं। क्या अुनका स्वास्थ्य पैदल यात्रा करने योग्य है? पेटका व्रण तो अभी तक दुरुस्त हुवा ही नहीं। पर अुन्हें कौन रोक सकता है? संभव है वे हैदराबादसे आगे भी बढ़ें। परंतु हम लोग आशा करते हैं कि वे अपनी पैदल यात्रा शीघ्र ही पूरी करके पुनः अपने वर्धावासी साथियों और संस्थाओंकी सुध लेंगे। जानकीदेवीजीने विनोबाको बोलनेके लिअे मानो प्रेरित किया: "जैसा कि अभी श्री जानकीदेवीने कहा है, संभव है हैदराबाद जानेके बाद मैं आगे भी बढ़ूं। अिसलिअे साधकको तो यही मानना चाहिये कि जो क्षण अपने हाथमें है वही योग्य है। अब मैं यहांसे बिदा ले रहा हूं। मैं नहीं जानता कि हम लोग फिर कब मिलेंगे। यानी हम लोगोंकी यह आखरी मुलाकात है।"

वर्धावालोंको अपनी जिम्मेवारीका अहसास कराते हुअे दो 'पावन नामों' का स्मरण दिलाया — अेक था बापूके अनन्य भक्त जमनालालजीका, जिनके कारण वर्धा नगरीको राष्ट्रनिर्माणकारी कार्योंकी प्रयोगशाला बननेका भाग्य मिला था; दूसरा था वर्धा-योजनाका। दोनों कारणोंसे वर्धाको जागतिक महत्त्व मिला था। "हमारी शिक्षण योजनाका नाम हमने सेवाग्राम-पद्धति रखा था। परंतु लोगोंने वह नाम नहीं अपनाया। वर्धा-योजना नाम चल पड़ा।" अैसे पावन नामोंका आधार होने पर काम क्यों नहीं होगा? श्रद्धापूर्वक काम किये जानेकी ही जरूरत होती है। अपने दो शब्दोंसे वर्धावालोंकी श्रद्धाको बल देकर विनोबाजी आगे बढ़े।

अुपस्थित मित्रोंमें भदंत आनंद कौसल्यायन भी थे। वाहनका अुपयोग न करनेके विनोबाके विचारोंके वे बड़े समर्थक रहे हैं। पासमें मुझे खड़ा पाकर सहज भावसे अुन्होंने कहा — "अिस यात्रा-रंभका मैं भी साक्षी रहना चाहता था।"

www.vinoba.in

अेक ही वाक्यमें अुन्होंने कितना कह डाला!

करीब ग्यारह बजे वायगांव पहुंचे। रास्तेमें सेलुकाटे पर अेक बीमार मित्रसे भेंट की।

(वायगांवकी शामकी प्रार्थनाका प्रवचन पिछले अंकमें छप चुका है।)

दूसरा मुकाम

[ता० ९-३-'५१: रालेगांव: सत्रह मील]

गिरोली, आंबोड़ा खानगांव, पोढ़ी होते हुअे बारह बजे रालेगांव पहुंचे। लोगोंको खबर बस अभी-अभी मिली ही थी कि हम लोग पहुंचे। अकाअेक ही तो चल पड़े थे। फिर भी जगह-जगह लोगोंने हार्दिक स्वागत किया। जाहिर था कि वे कुछ सान्त्वना पानेके लिअे अुत्सुक हैं। रास्तेमें गिरोली पर कलेवेके लिअे रुकना पड़ा। विनोबाने पूछा—"जनसंख्या कितनी है?" "अेक हजार।" "पहिले कितनी थी?" "अेक हजार।" "दस बरसोंमें बढ़नेके बजाय कायम रही; यानी घटी?"

"जी हां। अेक सौ तीस मजदूर परिवार गांव छोड़कर चले गये।"

विनोबाजी बड़ी वेदनाका अनुभव कर रहे मालूम होते थे। "आप लोग रोज प्रार्थना किया करें। आअिन्दा अैसी कोशिश करें कि मजदूर भाअियोंका दिल न दुःखे। अुनके साथ प्रेमका व्यवहार करें।"

आगे भी अेक-दो जगह जनसंख्या अिसी तरह कम होनेकी रिपोर्ट मिली। "अुद्योग नहीं, अिसलिअे लोग बाहर जाते हैं।" "आप लोगोंके बदन पर यह जो कपड़ा है, वह सब बाहरसे क्यों आता है? यहीं पर क्यों नहीं बनता? यह तो बड़ा भारी अुद्योग है।"—अिस तरह कहीं खादीकी तो कहीं खादकी, कहीं प्रार्थनाकी तो कहीं प्रेमकी बात कहते हुअे हम रालेगांव पहुंचे थे।

(रालेगांवका कुछ वृत्तांत पहले आ चुका है अिसलिअे दोहराया नहीं जाता।)

परन्तु वहांकी अेक प्रश्नोत्तरीका जवाब देना दिलचस्प होगा। पाठकको याद होगा कि 'अनाजमें मजदूरी' देनेकी चर्चा वहां भी निकली। कुछ काश्तकारोंने फौरन संकल्प जाहिर किया कि वे आअिन्दा हर स्त्री-पुरुष मजदूरको ५० तोला जवार और कुछ पैसा देंगे। लेकिन अेक भाअीको शंका हुअी कि अिस पर अमल कैसे होगा। अुन्होंने कहा: "लोग दस्तखत तो कर देंगे पर अमल नहीं करेंगे। वे तो सरकारको भी धोखा देते हैं।"

"पर वे खुदको धोखा नहीं दे सकते।" विनोबाने कहा। अुनके भीतर भी परमेश्वर रहता है। वह परमेश्वर ये बातें समझता है। अुसे अुद्देश्य करके ही मैं यह कह रहा हूं। काश्तकार अिस बातको समझते हैं कि जवारमें मजदूरी देनेसे मजदूर प्रेमपूर्वक काम करेगा। वह गांव छोड़कर नहीं जावेगा।"

"पर सरकार लेवीके रूपमें जवार जो वसूल कर लेती है?"

"बिलकुल ठीक। किन्तु वह सालदारोंके लिअे जैसे आवश्यक जुवार आपके पास छोड़ देती है, वैसे ही अिन मजदूरोंके लिअे भी छोड़ देगी। अुसे छोड़ना होगा। नतीजा यह होगा कि गांवके मजदूरोंके लिअे आवश्यक अनाज गांवमें ही रह सकेगा। अुनके खानेपीनेका यह अेक तरहसे बीमा हो गया। अिससे लूटमार अपने आप रुकेगी।"

"हम काश्तकार लोगोंकी नीयत साफ नहीं है। हमें बाहर अनाज बेचनेसे ज्यादा दाम मिलते हैं। पैसोंमें मजदूरी देना हमारे लिअे आसान है। हम आज आपके सामने हां कह देंगे, परन्तु हम तो अीश्वरको भी धोखा दे सकते हैं।"

"क्या आप समझते हैं कि अीश्वरको धोखा देनेवालेको अीश्वर सजा नहीं करता? अुसे रुलाता नहीं? लेकिन मुझे अिसकी चिन्ता नहीं है कि अीश्वरको कौन धोखा देता है। रशियामें सत्रह लाख लोगोंको कत्ल कर दिया गया। अगर अिसीकी पुनरावृत्ति यहां होनेवाली होगी, तो कौन क्या करेगा? संकल्प पर दस्तखत करनेवाला भी अपने संकल्पको नहीं मानेगा अैसा अगर आप कहना चाहते हैं, तो अुसका अर्थ होगा कि दुनियासे विश्वास ही अुठ गया। लेकिन संकटके समयमें दुर्जनोंमें भी सज्जनता प्रकट होती है। लंकामें भी विभीषण था। रालेगांवको लंकानगरी मान लें, तो यहां अेक भी विभीषण नहीं होगा, अैसा न समझें। और लंकामें अितने राक्षस थे, परन्तु सीताका वे कुछ नहीं बिगाड़ सके।"

अेक दूसरे भाअीने सवाल किया: "लेकिन विनोबाजी, जिनके घर जवारकी फसल आयी ही न हो, वे क्या करें?"

"हर गांवमें सहयोगी ग्रेन-बैंक रहेगा। वहांसे ठीक दामों पर काश्तकार जवार खरीद सकेंगे।"

"बाजार भाव कम ज्यादा होनेसे अिस जवारके प्रमाण पर कोअी असर होगा?"

"यही अिसकी खूबी है कि बाजार भावका अिस पचास तोला जवार पर कोअी असर नहीं होगा। जो कुछ असर होता है, पैसोंकी तादाद पर होगा। पर हर मजदूरके लिअे भोजनकी हद तक मानो बीमा ही अुतरा हुआ होगा।"

* * *

रालेगांवकी अेक छोटीसी किन्तु मीठी घटनाका अुल्लेख करना चाहिये। जवारमें मजदूरी देनेका संकल्प करनेवालोंमें श्री हीराचंद मुणोत भी थे। अुनके आठ बरसकी अुम्रवाले लड़केको बुखार था। अुसका आग्रह था कि विनोबाजीके डेरे पर जाकर अुनसे मिलूं। विनोबाजीको मालूम हुआ, तो वे ही अुसे देखने पहुंच गये। बच्चा खुश खुश हो गया। जब विनोबाजी चलने लगे, तो बच्चेके पिताजीने पूछा—"आपके साहित्यके प्रचारमें मैं पांच सौ अेक रुपया देता हूं। आप जैसा ठीक समझें अुपयोग करें।"

"मैं लेकर क्या करूंगा? यहीं आप किताबें मंगवा लें और अिस प्रदेशमें आप ही प्रचार करें।"

अिस तरह अेक कार्यकर्त्ताको सर्वोदयके काममें लगाकर विनोबा सखीकृष्णपुरके लिअे रवाना हुअे। मुझसे रास्तेमें कहने लगे—"मुझे सभाओंकी अपेक्षा अैसे अेक अेक व्यक्तिका ज्यादा आकर्षण है। जहां हम जाते हैं, वहां हमारा काम करनेवाले अैसे लोग मिल जायं तो काफी है।"

तीसरा मुकाम

[ता० १०-३-'५१: सखीकृष्णपुर: चौदह मील]

रालेगांवसे प्रार्थना करके सवेरे ठीक पांच बजे हम लोग सखीकृष्णपुरके लिअे चल पड़े। थोड़ी देर पक्की सड़कका रास्ता, फिर कच्चा रास्ता, फिर जंगल, फिर घना जंगल, अूंचे-अूंचे दरख्त, पलाश-पुष्पोंकी लालिमा, पतझड़, अुसके कारण पगडंडियों पर भी बिछी हुअी पीले पत्तोंकी फर्श—और सारे वातावरणको देखकर बीच-बीचमें विनोबाके मुखसे बहनेवाली वाग्गंगा! लंबी मंजिल भी सहज ही में तय होती रहती है।

रेलसे करीब पैंतीस मील दूर और मोटरकी सड़कसे पांच मीलके फासले पर 'सखी' अेक छोटासा देहात है। पचीससे कम मकान। कुल १८४ लोग। सबके सब सभामें अुपस्थित—स्त्री, पुरुष, बच्चे सब। अिर्दगिर्दके देहातोंसे भी लोग आये थे। पांच सौके करीब लोग थे सभामें। गांवके पड़ौसमें सुन्दर अमराअीकी छायामें हमारा डेरा था। वहीं प्रार्थनासभाका प्रबंध था। अुत्कलकी पैदल यात्रामें बापूजी जगह जगह अिसी तरह आमकी छायामें ठहरा करते थे। देहाती सभा, फिर भी अितनी अच्छी हुअी कि अब तक अुसका परस मालूम होता है। सब लोग बिलकुल शांत। सभाके बाद प्रश्नोंका नंबर आया:

www.vinoba.in

प्र० — अिधर कच्छी और सेठ लोगोंके यहां फसलें अच्छी होती हैं। लेकिन हमारे हिस्सेमें कुछ नहीं आता। ये लोग हमें कुछ अुद्योग भी क्यों नहीं देते?

अु०— आप लोगोंके बदन पर अितने कपड़े हैं। वे कहांसे आये? कपास तो आपके घरमें ही होती है? फिर कपड़ा क्यों खरीदते हो? सोना देकर बदलेमें पीतल लेते हो — अिससे ज्यादा और क्या मूर्खता हो सकती है? आपके पुरखे क्या करते थे? क्या वे बिना कपड़ेके रहते थे? वह सारा अुद्योग आप लोग खो बैठे — बिनौला आप नहीं निकालेंगे, धुनाअी आप नहीं करेंगे, कातेंगे नहीं — बुनना नहीं चाहेंगे। फिर गांवोंमें अुद्योग-धंधे आवेंगे कैसे? कितने रुपये लगते हैं हर साल कपड़ेके लिअे?

अु०— पच्चीस!

विनोबा:— लो। मैं तो समझता था, दस बारह रुपये खरच करते होंगे आप लोग। अैसी हालत है। और आजकल तो कालाबाजार भी जोरोंसे चल रहा है। अिसलिअे ज्यादा पैसे दिये बिना कपड़ा मिलता नहीं। और दिन ब दिन अुत्पादन कम हो रहा है। फिर ये हड़तालें आदि! ये मेरे बदनके कपड़े देखो। कपाससे कपड़े तककी सारी क्रियाअें आश्रममें हुअीं। पिछले पन्द्रह बरसोंसे बाजारमें कपड़ेके क्या भाव रहते हैं, मुझे मालूम नहीं, क्योंकि कभी खरीदना ही नहीं पड़ता है। लेकिन आप लोग खरीदते हैं। अिन बहनोंको देखियें। सारी धोतियां खरीदी हुअीं। तो अैसा कीजिये, अपने बच्चोंको बेच दीजिये और दूसरे ज्यादा अच्छे खरीद लीजिये। अच्छे बैल खरीदते हैं न हम? अुसी तरह! फिर देखिये संसार कैसे सुखसे बीतता है। गांवोंके अुद्योग-धंधे छलनी हो गये हैं। गांधीजीने कअी बार कहा। पर आप लोग आज नहीं सुनेंगे। गलेमें फांसी लगेगी तब सूझेगा। तभी सुनेंगे भी। अितना अच्छा है कि अभी अिस गांवमें आटेकी चक्की नहीं आयी है। लेकिन कल यदि आप लोग गेहूं बेचकर रोटियां खरीदने लगें और कहने लगें कि अुद्योग दीजिये, तो कच्छी या मारवाड़ी लोग या स्वयं सरकार भी आप लोगोंके लिअे क्या काम ढूंढेगी? कौनसे नये धंधे अीजाद करेगी? तिल तुम्हारा, तेल मोलका, सन तुम्हारा, रस्सी मोलकी; कपास तुम्हारी, कपड़ा मोलका। कैसी दुर्दशा है यह!"

अिस तरह और भी प्रश्नोत्तर हुअे। लोग शांतिके साथ सुनते जाते, और नयी नयी दिक्कतोंको पेश करते जाते। अेक भाअीने अपना और अपने गांववालोंका दुःख जाहिर करनेके अिरादेसे पूछा: "हमारे गांवमें कुवां खोदनेका प्रयत्न किया गया पर काम अैसा ही पड़ा है। और पानीकी कमी है।"

विनोबाने समझाया: "आपमें से कोअी जरा वर्धा चलकर देखे। जो लड़के किसी समय कॉलेजमें पढ़ते थे, वे अब क्या कर रहे हैं! अुनके हाथमें कुदाली है। वे कह रहे हैं कि ताकत अपने हाथमें होती है। वे लोग अपनी सब्जी, अपने फल, अपना कपड़ा खुद पैदा कर लेते हैं। देहातके बालकोंको क्या अिन चीजोंकी जरूरत नहीं होती? लेकिन आप लोग या तो ये चीजें पैदा नहीं करते और करते हैं तो शहरोंमें जाकर बेच आते हैं। मथुरासे बाहर जानेवाले मक्खनको, अुस कृष्णने जैसे अपने साथियोंको लेकर लूटना शुरू किया, वैसे ही अिन बच्चोंको करना होगा।"

अितने ही में अेक बहनने कहा: "बाबाजी, यहां बच्चोंकी पढ़ाअीका कोअी प्रबंध नहीं है।"

"बहुत अच्छा है। वह मदरसेमें पढ़ने जावेगा तो धीरे-धीरे यवतमाल या अमरावती रहने चला जायेगा। फिर यहां नहीं रह सकेगा।" देहातोंकी सारी बुद्धिशक्ति शहरोंकी ओर बहा ले जानेवाली अिस शिक्षा प्रणालीके प्रति हमें कौनसा रुख अख्तियार करना चाहिये अिसका यह चंद शब्दोंमें स्वच्छ मार्गदर्शन है।

चौथा मुकाम

[ता० ११-३-'५१ : रूंझा : ग्यारह मील]

सखीसे रामधुन गाते हुअे सवेरे पांच बजे रवाना हुअे। पहले दिन शामको ही महोदाके लोगोंने आग्रह किया था कि रूंझा जाते हुअे रास्तेमें हमारे यहां रुकना होगा। अुन्होंने कलेवेका प्रबंध भी किया था। कलेवेमें जवारकी रोटी और गुड़, या प्याज, या चून या दोनों या तीनों। लोग आतिथ्यपूर्वक बड़े प्यारसे सवेरे यह कलेवा हमें देते हैं। अुस निमित्तसे अुस गांवमें आधा घंटा ठहरना हो जाता है। गांवके सज्जनोंसे परिचय होता है। अैसे ही अेक सज्जन यहां भी मिले। वे पहिले रोज सखीकृष्णपुर भी आये थे। और शामको रूंझा भी आये। वे सर्वोदय साहित्यका मननपूर्वक अध्ययन करनेवालोंमें से अेक हैं। 'कांचन-मुक्ति'के प्रयोगके बारेमें अुन्होंने अधिक जानना चाहा। बातचीतके बाद, अुनका नाम याद रह सके अिसलिअे विनोबाने पूछा तो अुन्होंने बताया 'सरोदे'। विनोबाने कहा: "आजसे आपका नाम सरोदेके बजाय 'सर्वोदय' हो गया।"

रूंझामें अेक मुसलमान किसानके घर प्रबंध हुआ था। अुसकी गैरहाजिरीमें ही मित्रोंने अुसके घर प्रबंध किया था। जैसे ही अुसे खबर मिली हमारे पहुंचते पहुंचते वह खुद भी आ पहुंचा। हमसे शुद्ध मराठी बोल लेता। सिर्फ मराठी ही बोल सकता था। अुर्दू सीखी ही नहीं थी। घरके बरतन भी महाराष्ट्री ढंगके थे। अुन पर नाम भी नागरीमें लिखा था। अेक पटरी पर 'नवें जग' तथा अन्य मासिक पड़े हुअे थे।

पांच बजेसे मुलाकातोंका समय रहता है। अेक शिक्षक मिलने आये। कअी बरसोंसे वे अध्यापक हैं। तीस रुपया मासिक वेतन, अठारह रुपया महंगाअी! अब आजकल अितने कम वेतनमें जिंदगीका बसर होना कैसे संभव हो? 'सरकार'की तरफ ध्यान लगाये बैठे रहते हैं। मार्गदर्शन चाहा तो विनोबाने कहा: "हर मदरसेके लिअे अेक अेकड़ जमीन हो। पौन अेकड़ बच्चोंकी, पाव अेकड़ शिक्षककी। सब मिलकर सारी जमीन जोतें। शिक्षक अपने पाव अेकड़में से कुछ हिस्सेमें कपड़ेके लिअे कपास भी बोये। पांच आदमियोंके लिअे सौ गज कपड़ा यानी सौ पौन्ड कपास। पाव अेकड़ यानी १० बीघा जमीनमें से तीन बीघा जमीन कपासके लिअे काफी होगी। शेष जमीनमें सब्जियां। बुनाअी खुद शिक्षक कर ले। या अुतनी मदद सरकार करे। अिससे जीवन-मान आजकी अपेक्षा सहज ही बहुत सुधर सकता है, और सरकारको यह योजना पसंद भी आ सकती है। लड़के पौन अेकड़में काफी अुत्पादन कर लेंगे। अुनके कपड़ेके लिअे कपास तो निकलेगी ही, कलेवेके लिअे फल भी निकल आवेंगे।"

* * *

शामकी सभामें विनोबाजीके लिअे तख्त पर आसनका प्रबन्ध था। परन्तु लोगोंके बैठनेका कोअी प्रबन्ध नहीं था। न पानीका छिटकाव किया गया था, न बिछायत ही की गयी थी। विनोबाजीने खड़े रहकर ही कीर्तन किया। अेकनाथका भजन चुना था; 'हरि पीछे रे हरि आगे रे, हरि घरमें रे हरि दरमें रे।' सामने बच्चे खड़े थे। अुनसे पूछा: जब आप लोग भी हरि स्वरूप हैं और हम सब भी हरि स्वरूप हैं, तो यह कैसे अुचित होगा कि मैं तो सिंहासन पर बैठूं और आप धूलिमें?" अुस रोज सभा-संयोजनके बारेमें लोकशिक्षणका मानो वर्ग ही हुआ। अैसे भी प्रार्थना लोकशिक्षणका अंग ही बन गयी है। कोअी नया श्लोक बालकोंको सिखा देते हैं। बादमें अुसका चाहे जो संस्कार अुन पर रहता हो। ज्ञान बीज है व्यर्थ तो कैसे जा सकता है?

वा० मू०

www.vinoba.in

अडिग सत्याग्रही पांचा पटेल

कराड़ीके प्रसिद्ध सत्याग्रही पांचाकाका १५-२-'५१को गुरुवारके दिन दोपहरके दो बजे अपनी झोंपड़ीमें देवलोक सिधारे। मरनेके समय अुनकी अुमर लगभग ८५ वर्षकी होगी। १९२२ में बापू बारडोलीमें जब सामूहिक सत्याग्रहकी लड़ाअी शुरू करनेवाले थे, अुस समय पांचाकाकाने यह प्रतिज्ञा की थी कि संपूर्ण स्वराज्य न मिले तब तक सरकारको जमीनका लगान नहीं दूंगा। चौरीचोराके दंगेके कारण बापूने सत्याग्रह मुलतवी रखा, लेकिन पांचाकाका तो लगान न चुकानेमें अडिग रहे। बापूसे वे मिलने गये। बूढ़ेकी टेकको बापू समझ गये और अुनकी प्रतिज्ञा अुन्होंने मान ली। अुस समय सारे हिन्दुस्तानमें केवल पांचाकाका ही प्रथम और अेकमात्र सत्याग्रही रहे। सरकारने अुनकी जमीन जब्त कर ली। अिसके १७ वर्ष बाद जब पहली कांग्रेस सरकार बनी, तब सत्याग्रहके कारण जप्त की गअी सारी जमीनें मालिकोंको लौटा दी गअीं। परन्तु पांचाकाकाकी प्रतिज्ञा तो संपूर्ण स्वराज्यके लिअे थी। १९३९के कांग्रेसी मंत्रि-मंडलोंको अुन्होंने क्षणजीवी माना था। अिसलिअे जमीन वापिस मिल जाने पर भी लगान न देनेकी टेक अुन्होंने चालू ही रखी। फिर अेक बार पांचाकाका बापूसे मिले। अुनका अडिग निश्चय देखकर बापू खुश हुअे और लगानके प्रश्नका अुन्होंने यह हल सुझाया कि संपूर्ण स्वराज्य मिलने तक जमीन कराड़ीके खादी-कार्यके लिअे अर्पण कर दी जाय। पांचाकाकाने बापूकी सलाह मान ली और जमीनका अुपयोग खुदने नहीं किया। अुस समयसे संपूर्ण स्वराज्य मिलने तकके लिअे अपनी जमीन कराड़ीके भारत विद्यालय और गांधी कुटीरके खादी-कार्यके लिअे अुन्होंने दे दी।

१९४६में प्रथम अन्तरिम सरकार कायम हुअी और पंडित जवाहरलाल नेहरू तथा सरदार पटेल दिल्लीके मंत्रि-मंडलमें शामिल हुअे। अुस मौके पर जमीन वापिस लेनेकी पांचाकाकासे विनती की गअी। लेकिन अुनकी टेक तो जैसीकी वैसी बनी रही। संपूर्ण स्वराज्य कहां है? अैसा प्रश्न करके अुन्होंने अपनी जमीन नहीं जोती। १५ अगस्त, १९४७ को तो हिन्दुस्तानकी संपूर्ण सत्ता ब्रिटिश सरकारने प्रजाको सौंप दी। स्वातंत्र्य दिनका अुत्सव कराड़ीमें भी मनाया गया और पांचाकाकाने ही राष्ट्रीय ध्वज फहराया। अुस दिन फिर अुनसे जमीन वापिस ले लेनेकी विनती की गअी। तुरन्त अुन्होंने अिनकार कर दिया और कहा: "जब प्रजा पोलिस और फौजकी मददके बिना रहना सीखेगी, तभी मेरी स्वराज्यकी टेक पूरी होगी। बापू कहां साबरमती वापिस गये? बापू साबरमती जायंगे, तभी मैं जमीन जोतूंगा और लगान भरूंगा।" रामराज्य मिले तो लगान भरूंगा, अैसी अुनकी भव्य टेक थी। अन्तमें बापू भी चले गये। पांचाकाकाने अपनी संपूर्ण स्वराज्यकी ज्वलंत टेक अन्त तक मृत्युपर्यंत निबाही। न तो अुन्होंने जमीन कभी जोती, न कभी अुसका लगान भरा। बापूने अुनकी अिस टेकके बारेमें लिखा था: "पांचाकाकाकी टेक अद्वितीय ही रहेगी। सच्चा स्वराज्य नहीं मिला। अभी तो वह दूर है।" (हरिजनबन्धु, २८-१२-'४७)

सारे हिन्दुस्तानमें अैसे बिरले ही सत्याग्रही हुअे होंगे। पांचाकाका बापूके परम भक्त थे। अुन्होंने कराड़ीमें खादी-कार्यकी जड़ें जमाअी थीं। करघा अुनके भतीजे वालजीभाअी चलाते और पांचाकाका १९३४ में व्यवस्थित खादीकेन्द्र शुरू हुआ, तब तक गांव-गांव भटककर अुसके लिअे सूत अिकट्ठा करके लाते थे। शरीरमें शक्ति रही, तब तक अुन्होंने अपने हाथसे ही पींजा — हाथसे ही काता। १९२२से पूर्ण वस्त्र-स्वावलम्बी हुअे तो अन्त तक बने रहे। वे कबीरके भक्त थे। अुनकी झोंपड़ीके सामने बार-बार भजनोंकी धुन चलती थी। पूज्य विनोबा १९४९ में कराड़ी आये थे, तब अिनके भजन सुनकर वे खुश हुअे थे। जीवनके अंतिम वर्षोंमें अपने भतीजेके मरनेके बाद पांचाकाका बड़ी मुश्किलसे अपना गुजर चलाते थे।

समुद्रतटवर्ती प्रदेशके अेक कोनेमें पड़े हुअे अिस वीर सत्याग्रहीकी निष्ठा, निडरता और त्यागशक्ति प्रेरणादायिनी थी। वे नागपुर झण्डा सत्याग्रहमें शामिल होकर भी जेल भोग आये थे। अुनका जीवन भक्तिरससे ओतप्रोत था। अुस भक्तिबलके आधार पर ही अुन्होंने संपूर्ण स्वराज्यके लिअे शुरू किया हुआ अपना तप अन्त तक अखण्ड चालू रखा।

बापूकी पवित्र भस्म दांडीके समुद्रमें अुनके शुभ हाथोंसे ही विसर्जित की गअी थी। अुन्होंने अनन्य भक्तिभावसे यह काम किया था।

दिलखुश दीवानजी

[यह लेख जल्दी छप जाना चाहिये था। लेकिन कुछ दूसरे कागजोंमें दबा रहनेसे देरसे छप रहा है अिसका मुझे दुःख है।
(गुजरातीसे) —म०]

शराबबन्दीकी बन्दी?

संथाल परगना, बिहारमें नशाबन्दी आन्दोलन चल रहा है। अिसके बारेमें अेक सवाल और जवाब 'हरिजन सेवक'के पिछले अंकमें छपा था।

अुस परगनेसे अेक भाअी अुसी सवालको अुठाते हैं और कहते हैं:

> "बिहार प्रान्तमें संथाल परगना अेक पिछड़ा जिला है। यहांकी अधिकांश आबादी संथालोंकी है। यह जाति शराब-खोरीसे बरबाद हो रही है। सरकारसे याचना की गअी कि यहांसे शराबकी दुकानें अुठा दे। किन्तु सरकार कुछ नहीं कर रही है। अिसलिअे जिलेके सबसे बड़े गांधीवादी श्री मोतीलाल केजरीवालने नशाविरोधी आन्दोलन चलाया है। किन्तु बिहार प्रान्तीय कांग्रेसने आदेश दिया है कि कोअी भी कांग्रेसी अुस आन्दोलनमें शामिल नहीं हो सकते हैं। क्योंकि अभी कांग्रेसका लक्ष नशाबन्दी नहीं है। तो क्या "बापू" शराबबन्दी नहीं चाहते थे? हम कांग्रेसियोंको क्या करना चाहिये? बतानेकी कृपा करें।"

अैसा आदेश कर देना तो कांग्रेसके विधानके भी खिलाफ है। और भारतके विधानके खिलाफ तो है ही। नशाबन्दी कांग्रेसकी प्राथमिक और सक्रिय सभ्यताकी अेक नींव है — मूल शर्त है। अिसका अिन्कार किसी तरहसे कोअी कांग्रेसी सत्ता नहीं कर सकती। अिससे किसी कांग्रेसीके लिअे अुक्त आदेशको मानना लाजिमी नहीं हो सकता। बिहार सरकार यदि संथालोंके लिअे शराबबन्दीका काम जल्दीसे जल्दी न करे, तो वह भारतके विधानके आदेशोंके पालनमें अक्षम्य सुस्ती बताती है, अैसा ही मानना पड़ेगा। और कांग्रेसको चाहिये कि सजग रहकर वह सरकारको अिसके बारेमें टटोलती रहे।

अहमदाबाद, ३१-३-'५१ **मगनभाअी देसाअी**

विषय-सूची

		पृष्ठ
स्वर्गके बीच नरक	मीरा	४२
हिन्दुस्तानी तालीमी संघ	अी० व० आर्यनायकम्	४३
शराबबन्दी और शराबकी चोरबाजारी	मगनभाअी देसाअी	४३
हाथ-अुद्योग और यंत्र-अुद्योगोंका मेल — ४	कि० घ० मशरूवाला	४४
आसाम भूकंप राहत कोष	जीवणजी देसाअी	४४
विनोबाकी पैदल यात्रा — ३	दा० मूं०	४५
अडिग सत्याग्रही पांचा पटेल	दिलखुश दीवानजी	४८
शराबबन्दीकी बन्दी?	मगनभाअी देसाअी	४८
सूची: भाग ११ (१९४७-४८)		(४८क)
टिप्पणियां:		
देशके लिअे शराब पिओ?	कि० घ० म०	४१
पुलिस द्वारा गोलीबार	कि० घ० म०	४१
मुफ्त 'हरिजन'	कि० घ० म०	४१
अहिंसा सप्ताह	डब्ल्यु० अेस० फरनान्डो	४२

www.vinoba.in